MIZORAM UNIVERSITY JOURNAL OF HUMANITIES & SOCIAL SCIENCES
A Refereed Bi-annual Journal
ISSN(P): 2395-7352
eISSN: 2581-6780
Vol. VI, Issue 1 (June 2020) http://www.mzuhssjournal.in/

'Bitiya Chhathi Mai Ke': Voice of Women Identity

Sanjay Kumar*

Abstract

Every year thousands of films are made in many Indian languages. Bhojpuri is one of the famous languages of North India. Bhojpuri films are specially made for the entertainment of Bhojpuri-speaking people. But apart from entertainment, films are also a means of exposing social reality and expressing social messages. The film 'Bitiya Chhathi Mai Ke', made in the year 2019, is a successful film on the social theme and gives a great message to the society. In the male dominated society of India, women are discriminated. The film reveals this social problem and gives an emotional message to overcome it. The film presents the objective of the scheme of the Government of India 'Beti Bachao, Beti Padhao' in an artistic and creative manner.In the history of Bhojpuri cinema, very few films have been made on women identity, women discourse and women empowerment. This film is a successful film to overcome that gap.

Keywords*: Bhojpuri Cinema, Actor, Actress, Chhathi Mai, Women Empowerment.*

* Professor, Department of Hindi, Mizoram University, Aizawl - 796004, Mizoram. Email: sanjaykumarmzu@gmail.com

‘बिटिया छठी माई के’: स्त्री अस्मिता का स्वर

संजय कुमार*

शोध-पत्र सार

हजारों फिल्में प्रति वर्ष हिंदी के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में बनती हैं। भोजपुरी उत्तर भारत की सबसे महत्वपूर्ण और ताकतवर भाषा है। भोजपुरी भाषा में भी निरंतर रूप से फिल्में बनती आ रही हैं। भोजपुरी फिल्में विशेष रूप से भोजपुरी भाषा भाषी जनता के मनोरंजन के लिए बनाई जाती हैं। लेकिन मनोरंजन के अलावा फिल्में सामाजिक यथार्थ को उजागर करने और सामाजिक संदेश देने का भी कार्य करती हैं। सन 2019 ई. में बनी ‘बिटिया छठी माई के’ फिल्म सामाजिक विषय पर बनी एक सफल फिल्म है और समाज को एक बड़ा संदेश देती है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों के साथ भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया जाता है। यह फिल्म इस सामाजिक समस्या को उद्घाटित करती है और उसे दूर करने का भावनात्मक संदेश देती है। यह फिल्म भारत सरकार के ‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ योजना के उद्देश्य को कलात्मक एवं सृजनात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। भोजपुरी सिनेमा के इतिहास में स्त्री अस्मिता, स्त्री विमर्श और नारी सशक्तिकरण को कथ्य बनाकर कम ही फिल्में बनी हैं। यह फिल्म उस कमी को दूर करने वाली एक सफल फिल्म है।

बीज शब्द: भोजपुरी, सिनेमा, नायक, नायिका, छठी माई, स्त्री अस्मिता, स्त्री विमर्श और नारी सशक्तिकरण।

भोजपुरी सिनेमा के इतिहास को अगर ध्यान से देखा जाए तो ज्यादातर नायक प्रधान फिल्में बनाने की परंपरा रही है। शायद ही ऐसी कोई फिल्म बनी हो जिसमें नायिका की केंद्रीय भूमिका रही हो। भोजपुरी फिल्में भोजपुरी समाज में पसंद की जाती हैं और भोजपुरी समाज पुरुष प्रधान रहा है। भोजपुरी समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के केंद्र में पुरुष ही होते हैं। इसलिए स्वाभाविक रूप से भोजपुरी फिल्मों में भी नायक की ही प्रधानता दिखाई पड़ती है। महिलाओं की भूमिका भोजपुरी समाज में केवल घर और परिवार की चारदीवारी के

*आचार्य, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय, आइज़ॉल - 796 004. ईमेल: sanjaykumarmzu@gmail.com

अंतर्गत सीमित मानी जाती है। शायद यही कारण है कि भोजपुरी फिल्मों में भी महिलाओं को परिवार की सीमा के अंतर्गत ही भूमिकाएँ निभाते ज्यादातर पेश किया जाता है। हाँ यह सच है कि भारतीय समाज में महिलाओं को आदर्श, दया और त्याग की प्रतिमूर्ति माना जाता है। लेकिन ज्यादातर उनकी भूमिकाएँ अपने परिवार को समेटने, सहेजने और सुरक्षित रखने में दिखाई देती है। अगर उन्हें कोई तकलीफ, कष्ट और परेशानी भी होती है तो भी वे पारिवारिक बंधनों की मर्यादा की जंजीरों को तोड़ नहीं पाती हैं। तोड़ने की बात तो अलग है, उसे चुनौती देने का सोच भी नहीं पाती हैं। वे उसे अपनी नियति (भाग्य) मानकर स्वीकार कर लेती हैं।

परंपरा से भारतीय समाज में यह माना जाता है कि स्त्री बाल्यावस्था में अपने पिता के संरक्षण में, विवाह के उपरांत अपने पति के संरक्षण में और वृद्धावस्था में अपने पुत्र के संरक्षण में रहती है या यूँ कहें कि रहना चाहिए। कहीं ना कहीं भारतीय समाज की यह मानसिकता भोजपुरी सिनेमा में भी परिलक्षित होती है। भोजपुरी सिनेमा के इतिहास में सर्वत्र ऐसी ही स्त्री पात्र या महिलाएँ दिखाई देती हैं जो पारिवारिक हित के लिए अपना सर्वस्व निछावर करने को तैयार रहती हैं। लेकिन वे मुँह से कुछ भी नहीं कहती हैं, कभी कोई शिकायत नहीं करती हैं।

आज भोजपुरी सिनेमा का इतिहास लगभग 60 वर्षों का हो चला है और वह 21वीं सदी के दो दशक को लगभग पार कर चुकी है। 21वीं सदी के इस दौर में भोजपुरी सिनेमा सफलता के रथ पर सवार हो कर आगे गतिमान है। वह सफलता और कमाई के नित्य नए प्रतिमान गढ़ रही है। लेकिन सफलता के इस चकाचौंध में वह भोजपुरी संस्कृति की महक, देश की मिट्टी की सुगंध, ग्रामीण समाज की खुशबू और भाषा की मिठास से दूर होती जा रही है। वह भोजपुरी समाज के यथार्थ और 21वीं शताब्दी में बदलती हुई दुनिया के सच से आँख चुराती हुई महसूस हो रही है। उसे उद्घाटित और चित्रित करने का साहस शायद अभी उसमें नहीं आ पाया है। शायद इसीलिए भोजपुरी सिनेमा के कलाकार और मर्मज्ञ समीक्षक मनोज कुमार सिंह 'भावुक' अपने 'भोजपुरी सिनेमा के विकास यात्रा' (भोजपुरी सिनेमा के इतिहास: भाग-1) शीर्षक आलेख में लिखते हैं कि "आज हम लोग 21वीं सदी के दहलीज पर खड़े हैं। इस साल के अंत में एक सहस्राब्दी... और तब भोजपुरी सिनेमा 40 वर्ष की प्रौढ़ हो जाएगी। लेकिन उम्र के इस पड़ाव पर भी उसमें प्रौढ़ावस्था वाली गंभीरता नहीं है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ी है...लड़कपन बढ़ता गया है... और ऐसा लड़कपन जिसे समय और इतिहास कभी भी माफ नहीं कर पाएगा। अब तो जिस डाल पर बैठे हैं, उसी डाल को काटने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।"[1]

भोजपुरी सिनेमा के इतिहास में कम ही ऐसी फिल्में हैं जो स्त्री चरित्र को, स्त्री की समस्याओं को, स्त्री के संघर्ष को और स्त्री के सपनों को संपूर्णता में यथार्थवादी शैली में प्रस्तुत करती हैं और उनके व्यक्तित्व का क्रांतिकारी चित्रण करती हों। हाँ यह सच है कि स्त्रियों से संबंधित कुछ समस्याओं का उद्घाटन किया गया है। दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, यौन दुराचार और अशिक्षा आदि समस्याओं का चित्रण भोजपुरी सिनेमा में यदा-कदा होता रहा है। परंतु यह चित्रण क्रांतिकारी, समाज को चुनौती देने वाला और उसे बदलने वाला नहीं दिखता है। 21वीं सदी के प्रारंभ में भोजपुरी सिनेमा ने सफलता का जो रोमांस, एक्शन, हिंसा, आइटम सांग, अश्लीलता, मांसलता आदि का फार्मूला ईजाद कर लिया है, वह इससे इतर कुछ भी सोचने, समझने, देखने और दिखाने को तैयार नहीं है। अगर रोमांस, एक्शन, हिंसा, आइटम सांग, अश्लीलता, मांसलता आदि से भोजपुरी फिल्मों को सफलता मिल जाती है और वह अंधाधुंध कमाई करती है तो फिर कुछ और देखने और दिखाने की आवश्यकता ही क्या है? भोजपुरी फिल्मकारों की इस मानसिकता ने भोजपुरी सिनेमा को जीवन और जगत के सच और यथार्थ से काफी दूर कर दिया है। प्रो. आलोक पाण्डेय भोजपुरी सिनेमा के समाजशास्त्र और उसके पतन के विविध रूपों का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि "अपना मूलधन निकालने और अधिकतम लाभ कमाने के एक मात्र उद्देश्य से भोजपुरी फिल्में बनाने वाले बाहरी और भीतरी दोनों ही लोगों ने फिल्म के प्रेम दृश्य में मांसलता और संघर्षों में जबरदस्त हिंसा को बढ़ाया, कामुक आइटम गानों और द्विअर्थी अश्लील संवादों की भरमार की। इन सब की नजर भोजपुरी समाज के निम्न / श्रमिक वर्ग पर थी, जिन्हें हिंदी सिनेमा उपेक्षा से फ्रंट बेंचर्स कहता रहा है। इन्होंने उन्हीं फ्रंट बेंचर्स को मुख्य दर्शक बना दिया। नतीजा मध्य वर्ग, स्त्रियाँ और बच्चे भोजपुरी फिल्मों को खराब मानते हुए दूर ही रहे। इसका नुकसान भोजपुरी सिनेमा को दो रूपों में हुआ – एक, आर्थिक रूप में। क्योंकि दर्शक कम हुए। दूसरा, सांस्कृतिक रूप में। क्योंकि अगर भोजपुरी भाषी शिक्षित मध्य वर्ग और परिवार इनको देखते तो इन पर एक नैतिक और सांस्कृतिक दबाव पड़ता और ये उस पतन के शिकार नहीं होते, जिसके होते गए।

इनके पतन का एक और भी पहलू है। ये सच है कि ये फिल्में सफल तो हो रही हैं पर इनका कोई कलात्मक विकास नहीं हो रहा है। न तो इनके पास ढंग की कहानियाँ हैं और न ही सिनेमाई क्राफ्ट की कुशलता। सच्ची ग्रामीण सभ्यता और संस्कृति भी लुप्तप्राय ही हैं।"[2]

भोजपुरी सिनेमा आज 21वीं शताब्दी के यथार्थ से आँख नहीं मिला पा रही है। सभी भोजपुरी फिल्मों में नायिकाएँ हैं, स्त्री पात्र हैं और उनकी अपनी निश्चित भूमिकाएँ भी हैं। लेकिन

इनमें से कोई भी भूमिका और चरित्र स्त्री अस्मिता और उसके क्रांतिकारी सोच को उद्घाटित नहीं करती है, उनकी भूमिका को यादगार नहीं बनाती है। भोजपुरी की ऐसी बहुत कम फिल्में हैं जो स्त्री समस्याओं और स्त्री अस्मिता को लेकर गंभीर हैं और उनका उद्घाटन करती हैं।

सन 2019 ई. में बनी 'बिटिया छठी माई के' फिल्म इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण फिल्म है। इसके निर्माता दीपक शाह और निर्देशक सुजीत वर्मा हैं। इस फिल्म में यश कुमार ने नायक की और अंजना सिंह व प्रीति सिंह ने नायिका की भूमिकाएँ निभाई हैं। इस फिल्म की शुरुआत स्त्री को मान-सम्मान और अस्मिता प्रदान करने की माँग से होती है और इस फिल्म का अंत बेटी और बेटा एवं स्त्री और पुरुष को समान मनाने और उन्हें बराबरी का दर्जा देने की मंगल कामना से होती है। इस फिल्म का नायक भोला नामक एक मंदबुद्धि इंसान है जो चैनपुर गाँव के प्रधान के यहाँ आश्रय पाया है। वह प्रधान को अपना बड़ा भाई और भगवान की तरह मानता है। जब वह एक अनाथ बालक था, तब एक बार वह गाँव के प्रधान के पिता जी की गाड़ी से टकरा कर घायल हो गया था। उसी दुर्घटना में सर पर लगी चोट की वजह से वह मंदबुद्धि हो गया है। गाँव के प्रधान के पिता दयावश उसे अपने घर उठा लाते हैं, तभी से भोला इस घर का सदस्य बन जाता है। मरते समय गाँव के प्रधान के पिता अपने पुत्र को भोला की जवाबदेही सौंप जाते हैं। तभी से प्रधान उसे अपने छोटे भाई की तरह मानते हैं।

फिल्म के प्रारंभ में ही भोला अपने मित्रों के साथ लक्ष्मी माँ के एक मंदिर में बैठकर देवी की आराधना और आरती कर रहा है। उस आरती में वह भोजपुरी (भारतीय) समाज की बेटियों के प्रति सोच का पर्दाफास करते हुए देवी माँ से यह माँग कर रहा है कि बेटियों को भी भोजपुरी (भारतीय) समाज में सम्मान मिले और बेटियों (स्त्रियों) को लेकर भोजपुरी (भारतीय) समाज के लोगों के दिल में जो अंधेरा छाया हुआ है, वह मिट जाए। देवी माँ भोजपुरी (भारतीय) समाज के उस अंधेरे को मिटा दें। भोला इस आरती में देवी को गुहारते हुए कहता है कि -

"दया कर हे लक्ष्मी मैया, भक्त कइले निहोरा बा।...2
दिहल सब कुछ हवे तोहरे...2, इ तोहसे जग अँजोरा बा।
दया कर हे लक्ष्मी मैया, भक्त कइले निहोरा बा।...2
हऊ अन्न धन के दाता तू, तू ही रखवार हे मईया।...2
ह तोहरे रूप बेटी में, कहे संसार हे मईया।...2
दया के आस ले घर में, त तोहके सब बोलावे ला।...2
मगर बेटी के अइला से, काहे सब मुँह गिरावेला।...2
ह्वे जे आँख के पुतरी, भइल काहे उरोरा बा। ...2

दया कर हे लक्ष्मी मैया, भक्त कइले निहोरा बा।...2
भइल बेटी से अब काहे, विमुख इंसान हे मईया।...2
मिले सम्मान बेटी के, कर कल्याण हे मईया।...2
घिरल बेटी के प्रति इंसान के, दिल में अँधेरा बा। ...2
मिटा दउ अँधेरा, अब प्रकट होखे के बेरा बा। ...2
झुकल बा शीश चरनन में, इ मनवा तोहरी ओरा बा।...2
दया कर हे लक्ष्मी मैया, भक्त कइले निहोरा बा।...2"[3]
(फिल्म का भोजपुरी गीत / भजन)

"हे लक्ष्मी माँ! आप दया करें। भक्त आपसे यह लगातार प्रार्थना कर रहे हैं। इस संसार में जो कुछ भी है, वह सब आपका ही दिया हुआ है। आप से ही इस संसार में प्रकाश है। आप ही अन्न और धन की दाता हैं, आप ही इस संसार की रक्षक हैं। हे माँ! संसार बेटियों को आप का ही रूप कहता है। धन-धान्य के आशीर्वाद और दया के लिए सभी लोग आपको अपने घरों में बुलाते हैं। मगर जब किसी घर में बेटी का जन्म होता है तो लोग मुँह गिरा लेते हैं और उदास हो जाते हैं, जो बेटियाँ आँखों की पुतली होती हैं, उसे ही लोग आँखों का पत्थर मान लेते हैं। अब उसी बेटी से इंसान और समाज विमुख होता जा रहा है। इसलिए बेटियों को सम्मान मिले। हे माँ! तुम यह कल्याण करो। बेटियों के प्रति इंसानों के दिल में जो अंधेरा छाया हुआ है, आप उस अंधेरे को मिटा दें। आप इस पृथ्वी पर स्वयं जन्म लेकर बेटियों के प्रति जो अन्याय, अत्याचार हो रहा है, जो अंधकार है, आप उसे समाप्त कर दें। मेरा सिर श्रद्धावश आपके चरणों में झुका हुआ है और मेरा मन आपकी ओर लगा हुआ है। हे लक्ष्मी माँ! आप दया करें। भक्त आपसे यह लगातार प्रार्थना कर रहे हैं।" (हिंदी अनुवाद)

भोला चैनपुर गाँव के प्रधान के घर पर रहता है और प्रधान को अपने बड़े भाई और उनकी पत्नी को अपनी भौजी (भाभी) मानता है। वह खेती का कार्य करता है। लेकिन मंदबुद्धि होने की वजह से सब लोग उसे बेवकूफ या पागल समझते हैं। प्रधान की पत्नी भोला को अपने बेटे की तरह मानती है। प्रधान भी भोला को अपने छोटे भाई की तरह स्नेह देते हैं। प्रधान को कोई बच्चा नहीं है। उन्हें अपने नि:संतान होने का बहुत ज्यादा दुख है। लेकिन इसके लिए वे अपनी पत्नी को कसूरवार मानते हैं। वे यही समझते हैं कि उनकी पत्नी बाँझ है। इसलिए गाहे-बगाहे वे अपने सार्वजनिक जीवन में ग्रामवासियों से बात करते हुए अपनी पत्नी को ही दोषी ठहराते हुए कहते रहते हैं: "मेरे

आँगन की जमीन ही बंजर है। क्या करूँ? मेरे आँगन की जमीन ही बंजर है। लेकिन आप तो जानते हैं कि हम नि:संतान हैं। मेरा बगीचा तो आज तक एक भी फूल नहीं खिला पाया।"[4] (हिंदी अनुवाद)

जब प्रधान की पत्नी माँ न बनने के कारण डॉक्टरनी से चेकअप कराती हैं तो डॉक्टरनी उन्हें स्पष्ट बता देती हैं कि वे पूरी तरह से स्वस्थ हैं और उनके माँ न बन पाने का कारण उनके पति हैं। डॉक्टरनी कहती हैं कि "आप माँ बन सकती हैं पर आपके पति बाप नहीं बन सकते हैं। आप में कोई कमी नहीं है, कमी आपके पति में है। आप उन्हें बताती क्यों नहीं हैं?" तब प्रधान की पत्नी कहती हैं- "नहीं डॉक्टर साहिबा! मैं बाँझ का कलंक लेकर पूरी जिंदगी जी सकती हूँ। परंतु अपने पति के मान सम्मान को ठेस पहुँचा कर एक पल भी नहीं जी पाऊँगी। मैं उनसे ऐसी कोई भी बात नहीं कर सकती हूँ जिनके कारण उनका सिर शर्म से झुक जाए।" तब डॉक्टरनी स्पष्ट कहती है कि- "लेकिन यह समझदारी नहीं है, बेवकूफी है। दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच गई और तुम स्वाभिमान और आत्मसम्मान में अटकी हो।" तब प्रधान की पत्नी कहती हैं कि "इसलिए मैडम की मेरा पति ही मेरा सब कुछ है।"[5] (हिंदी अनुवाद) भोला डॉक्टरनी और अपनी भाभी की सभी बातें सुन लेता है और वह यह जान जाता है कि भाभी के माँ न बनने का कारण उनका बड़ा भाई है। वह अपनी भाभी को भी कहता है कि वे भैया को यह बता दें ताकि वे आपको बाँझ होने का ताना ना मारें। लेकिन भाभी अपनी कसम देकर उसे हमेशा के लिए चुप रहने को कहती है जिसकी वजह से भोला मन मसोसकर इस बात को अपने दिल में छुपा लेता है और भाभी पर होने वाले अन्याय को चुपचाप देखता और सुनता रहता है।

इसी दौरान छठ का पर्व आता है। पूर्वी भारत में विशेषकर पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के बड़े हिस्से में छठ पर्व एक लोक आस्था का महापर्व के रूप में मनाया जाता है और यह माना जाता है कि छठ पर्व करने वाले को सूर्य देव और छठी मइया संतान होने का आशीर्वाद देती हैं। प्रधान की पत्नी भी छठ का व्रत करती हैं और सूर्य को अर्ध्य देने के बाद छठी मइया से बेटा होने का आशीर्वाद माँगती हैं। नायक भोला अपनी भाभी से पूछता है कि आपने छठी मइया से क्या माँगा? तब भाभी जवाब देती हैं कि एक बांझिन छठी मइया से क्या माँग सकती है! अपने लिए मैंने एक बेटा माँगा है। इस पर नायक आश्चर्य और दुख व्यक्त करते हुए कहता है कि "बेटा! इस समाज की इससे बड़ी विडंबना और क्या होगी भौजी! पूजा करने वाली एक बेटी है, एक माँ है, एक कन्या है। जिसकी पूजा हो रही है, वह छठी मइया भी एक बेटी हैं, एक माँ हैं, एक कन्या हैं। एक बेटी एक बेटी की पूजा करके बेटी नहीं माँगती है, बेटा माँगती है। समाज की इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है? हे छठी मइया! अगर आपको कभी मुझे देना हो तो बेटी देना। मुझे बेटी चाहिए। बेटा नहीं चाहिए।"[6] (हिंदी अनुवाद)

भोला अपने भोलेपन में हमेशा यह चाहता है कि उसकी भाभी को कोई ना कोई संतान हो जाए और इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहता है। एक बार फिल्म की नायिका अंजू भोला के मंदबुद्धि होने का मजाक उड़ाते हुए और उसे परेशान करने के लिए यह सलाह देती है कि अगर वह पूरे दिन एक लकड़ी के ऊपर एक पैर पर खड़ा होकर ईश्वर की आराधना करे तो उसकी भाभी को बच्चा हो सकता है। भोला अपने भोलेपन में इस बात को सच मान लेता है और पूरे दिन और पूरी रात एक पैर पर खड़ा रह कर ईश्वर की आराधना करता है। इसी बीच वह गिरकर बेहोश हो जाता है और उसकी तबीयत खराब हो जाती है। बाद में जब नायिका को अपनी गलती और भोला की सच्चाई, सहृदयता, उदारता, त्याग और परदुखकातरता का पता चलता है, तब वह भोला से प्रेम करने लगती है। वह अपने पिता को बाध्य करती है कि वह उसका रिश्ता भोला से तय कर दें। नायिका के पिता भी भोला की सच्चाई को सुनकर उसका रिश्ता भोला से तय कर देते हैं। लेकिन इसी बीच कोई अपनी नवजात बच्ची को गाँव के मंदिर की सीढ़ियों पर छोड़ जाता है। जब गाँव वालों को इसका पता चलता है तब सभी वहाँ पहुँचते हैं और उस बच्ची के अवैध होने की बात करने लगते हैं। इस बीच में वह नवजात बच्ची लगातार रोती रहती है। लेकिन कोई भी उसे उठाने को तैयार नहीं होता है। सब उसे पाप की निशानी मानते हैं। गाँव का कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के पाप को अपने गले नहीं लगाना चाहता है। किसी गाँव वाले की दया और ममता उस बच्ची के प्रति नहीं जगती है। यहाँ तक की गाँव के प्रधान भी उस बच्ची को अनाथालय में भेजने की बात करते हैं। ऐसे में भोला को बहुत दुख होता है कि कोई उस भूखी-प्यासी और रोती-बिलखती बच्ची की सुध क्यों नहीं ले रहा है। वह अपने भोलेपन में आगे बढ़ता है और उस बच्ची को गोद में उठा लेता है। गाँव के प्रधान और भोला के बड़े भाई उसे मना करते हैं कि इस बच्ची को अपने साथ मत ले चलो। इसे अनाथालय में भेज दिया जाएगा। लेकिन भोला उस बच्ची को छठी माई का आशीर्वाद समझता है और अपने भाई को सलाह देता है कि वे इस बच्ची को गोद ले लें, जिससे इस बच्ची को माँ-बाप का प्यार मिल जाएगा और प्रधान और उनकी पत्नी को बच्चा मिल जाएगा। लेकिन प्रधान जी उसकी बात पर क्रोधित हो जाते हैं और कहते हैं कि 'वे किसी दूसरे के पाप को अपने घर में जगह नहीं देंगे।' भोला लगातार अनुरोध करता रहता है। लेकिन वे इसे स्वीकार नहीं करते हैं। तब भोला उस बच्ची को खुद गोद में उठा लेता है और उसे पालने का निर्णय करता है। अपनी धार्मिक आस्था और विश्वास के कारण भोला को लगता है कि वह नवजात बच्ची उसे छठी माई की दी हुई आशीर्वाद है। और छठी माई की दी हुई आशीर्वाद को भला वह कैसे छोड़ सकता है। भोला के बड़े भाई और गाँव के प्रधान यह स्पष्ट कर देते हैं कि अगर भोला इस बच्ची को पालना चाहता है तो वह उसे उसके घर नहीं ला सकता है। वह उसे अपने घर में रहने की इजाजत नहीं देंगे। भोला के नहीं मानने पर वे भोला को अपने घर से बाहर निकाल देते हैं। मजबूरन भोला प्रधान जी का घर छोड़कर एक झोपड़ी में रहने लगता है। परंतु वह उस अनाथ बच्ची को त्यागने को तैयार नहीं है।

जब नायिका के पिता को इस बात की जानकारी होती है तो वे नायिका के साथ भोला के घर उसको समझाने आते हैं। वे भोला को समझाने का प्रयास करते हैं कि वह उस लड़की को अनाथालय में छोड़ आए वरना वे लोग उसकी शादी को तोड़ देंगे। भोला अपनी शादी को टूटने देता है पर उस बच्ची को छोड़ने को तैयार नहीं होता है। बाद में नायिका की शादी कहीं और हो जाती है और भोला देखता रह जाता है। दिल के टूटने के बाद भोला की जिंदगी का केवल एक ही मकसद रहता है- बच्ची का लालन-पालन। वह उस बच्ची को अपनी बेटी की तरह पालता है, उसे माँ और बाप दोनों का प्यार देता है। तमाम कष्टों और परेशानियों को उठाकर भी भोला छठी माई के उस आशीर्वाद और अपनी बेटी ज्योति कालालन-पालन बहुत अच्छी तरह से करता है। वह अपना सारा प्यार उस पर न्योछावर करता है। उसे लगता है कि उसका घर बेटी की वजह से खुशबू से भर गया है और उसकी बेटी की बोली कोयल की तरह मीठी है। अगर उसकी बेटी नहीं रहेगी तो उसका आँगन सूना हो जाएगा। वह मानता है कि उसकी बेटी ही उसके दिल का सुकून है, शांति है:

"ले के जन्म कइलू घर के पवितर, गमकेला घर जइसे गमकेला इतर।...2

कोयल के बोली जइसे बागन गूँज, तोहरा बिना आँगन लागेला सून।

छाती से लगा के सब भूल जाईं गम, कबहुँ न बाबू जी के प्यार होई कम।

ओ मेरी बिटिया, प्यारी सी बिटिया।...2

जब जब देखीं मिले दिल के सकुन, तोहरा बिना आँगन लागेला सून।...2

छाती से लगा के सब भूल जाईं गम, कबहुँ न बाबू जी के प्यार होई कम।

ओ मेरी बिटिया, प्यारी सी बिटिया।...2"[7]

(फिल्म का भोजपुरी गीत)

दूसरी तरफ ज्योति भी अपने पिता से बहुत ज्यादा प्यार करती है। उसे इस बात का एहसास है कि उसके पिता ने उसे अनाथ होते हुए भी अपना नाम दिया। उसे अपने घर में आश्रय दिया और उसका लालन-पालन अच्छे से किया। इसीलिए वह अपनी सारी दुनिया जहान अपने पिता को ही मानती है और अपने पिता में भगवान का रूप देखती है। इसलिए वह अपने पिता से अनुरोध करती है कि आप हमेशा मुझे अपनी आँखों के सामने रखेंगे:

"ओ मेरे पापा, प्यारे से पापा। ...2

तोहरे में बसे हमर दुनिया जहान, तोहरे सूरत में लउके सभे भगवान।

माई के अँचरा तू ही, सब के दुलार, नजरी के सोझा रखिह पापा हमार।

ओ मेरे पापा, प्यारे से पापा। ...2"[8]

(फिल्म का भोजपुरी गीत)

वह उसे पढ़ा लिखा कर एक बड़ा इंसान बनाना चाहता है। वह खुद मजदूरी करता है लेकिन अपनी बेटी ज्योति को उसगाँव के सबसे बड़े और महंगे प्राइवेट कान्वेंट स्कूल में पढ़ाता है। ज्योति भी पढ़ने में तेज है और 12वीं की परीक्षा में पूरे जिले में टॉप करती है। इससे उसका पिता भोला काफी खुश होता है।

भोजपुरी समाज में छक्कों (हिजड़ों) को हेय दृष्टि से देखा जाता है। लेकिन बच्चों के जन्म आदि पर उनके आशीर्वाद को शुभ माना जाता है। जब किसी घर में बेटे का जन्म होता है तो वे आते हैं और नाचते-गाते हुए बच्चे को आशीर्वाद देते हैं और घर वाले खुशी-खुशी उन्हें नेग में रुपये देते हैं। परंतु सामान्यतः बेटे के जन्म पर ही लोग उन्हें नेग देते हैं। बेटी के जन्म पर कोई भी उन्हें नेग नहीं देता है। इसलिए वे भी किसी घर में बेटी के जन्म पर बेटी को आशीर्वाद देने नहीं जाते हैं। यह परंपरा बेटी के संबंध में भोजपुरी समाज की उस हीन मानसिकता को दर्शाती है, जिसमें समाज में बेटी को बेटे की तुलना में हीनतर समझा जाता है और उसे कम महत्व दिया जाता है। इसीलिए सभी लोग बेटे के जन्म को ही खुशी का मौका मानते हैं और बेटी के जन्म को दुख का कारण समझते हैं।

जबकि भोला इस प्रकार की दक़ियानूसी बातों में विश्वास नहीं करता है। वह अपनी बेटी के 12वीं की परीक्षा में पूरे जिले में टॉप करने पर बहुत खुश होता है और जब उसे रास्ते में कुछ छक्के (हिजड़े) मिलते हैं तो वह उन से अनुरोध करता है कि "आप सभी मेरे घर चलिए और मेरी बेटी को आशीर्वाद दीजिए। आज मेरी बेटी का जन्मदिन है। आज वह 18 साल की हो गई है। आप जानते हैं कि वह पूरे जिले में 12वीं की परीक्षा में टॉप की है। इसलिए कृपया आप सभी मेरे घर चलिए और मेरी बेटी को आशीर्वाद दीजिए।" इस पर छक्कों का नेता आश्चर्य व्यक्त करता हुआ कहता है कि "लेकिन हम लोग तो केवल बेटा होने की खुशी में नाचते हैं, गाते हैं। बेटा होने का नेग लेते हैं, बेटी होने का नहीं।" तब नायक भोला समाज पर कटाक्ष करता हुआ कहता है कि "वाह रे समाज! वाह रे समाज के लोग! आदमी वही नियम बनाता है जो नियम उसके खातिर फायदेमंद होता है। बेटा बुढ़ापा तक साथ देता है। इसलिए बेटे की खुशी के लिए सब कुछ किया जाता है। बेटी तो पराया धन होती है। इसलिए बेटी की खुशी के लिए कुछ भी नहीं किया जाता है। लेकिन आप सब लोगों को तो कम से कम यह नहीं सोचना चाहिए क्योंकि जब भगवान ने आप लोगों को बनाया तो आधी बेटी और आधा बेटा जैसा बनाया। आप सभी लोग मेरे घर चलिए और मेरी बेटी को आशीर्वाद दे दीजिए।" तब छक्कों का नेता भाव विह्वल होते हुए कहता है कि "आज तक सारे जमाने ने हमलोगों को गाली और मजाक का पात्र बनाए रखा है। आज पहली बार किसी ने हमें बेटी का दर्जा दिया है। आज आपके दरवाजे पर हम लोग जरूर चलेंगे और ऐसा ठुमका लगायेंगे, ऐसा ढोल बजाएंगे कि

सारा जमाना देखते रह जाएगा। चलिए चाचा जी।"[9] (हिंदी अनुवाद)। इसके बाद सभी छक्के भोला के घर आते हैं और उसकी बेटी ज्योति को आशीर्वाद देते हैं।

स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद ज्योति का दाखिला कॉलेज में होता है और कॉलेज में पढ़ने के दौरान ज्योति का परिचय और प्रेम संबंध प्रकाश नामक एक युवक से हो जाता है। प्रकाश एक बड़े अमीर बाप का संस्कारी लड़का है। दोनों एक दूसरे को प्यार करते हैं। एक दिन भोला दोनों को एक साथ देख लेता है जिससे वह दुखी होता है। उसे लगता है कि उसकी बेटी कॉलेज में अपनी पढ़ाई पूरी ईमानदारी से नहीं कर रही है। बल्कि वह गलत लड़के के बहकावे में आकर प्रेम के गलत रास्तेपर चल पड़ी है। जहाँ पर कोई अमीर घर का बिगड़ा हुआ लड़का उसकी बेटी का शारीरिक शोषण कर सकता है। इसलिए वह अपनी बेटी के इस प्रेम संबंध से दुखी और नाराज होता है। अपने पिता को रोता हुआ देखकर ज्योति को दुख होता है। वह अपने पिता के पास आती है और कहती है कि "नहीं पापा, प्रकाश ऐसा लड़का नहीं है। वह तो एक बहुत बड़े खानदान का संस्कारी लड़का है और आप हमारे भगवान हैं। मैं आप के सम्मान को कभी भी ठेस नहीं पहुँचा सकती हूँ। आपने एक अनाथ को अपना नाम दिया। उसे दुनिया में सिर उठा कर जीने लायक बनाया। मेरे खातिर आपने अपनी पूरी जिंदगी कुर्बान कर दी। ठीक है, कल मैं प्रकाश को बुला लेती हूँ। आप भी उससे मिल लीजिए। अगर वह आपको पसंद आएगा तो ठीक है। वरना आप जैसे पापा के ऊपर उस जैसे हजारों प्रकाश कुर्बान हैं।"[10] (हिंदी अनुवाद) अपनी बेटी के इस प्रकार की समझदारी पूर्ण बात को सुनकर भोला शांत हो जाता है और फिर वह प्रकाश से मिलने को तैयार हो जाता है। अगले दिन प्रकाश भोला से मिलने आता है। प्रकाश की बात और व्यवहार को सुन-जानकर भोला अपनी बेटी ज्योति का विवाह उससे करने को तैयार हो जाता है।

फिर वह प्रकाश के पिता से मिलने जाता है और वहाँ अपनी गरीबी और मजबूरी को प्रकट करता है। लेकिन प्रकाश के पिता भोला और भोला की बेटी ज्योति से काफी प्रसन्न हैं। वे बिना किसी दहेज के और बिना किसी माँग के अपने बेटे प्रकाश की शादी भोला की बेटी ज्योति से करने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं। भोला प्रसन्न होकर शादी की तैयारियाँ करने में जुट जाता है। लेकिन भोला जिस व्यक्ति के घर पर नौकर का काम करता है। उनका बिगड़ैल बेटा ज्योति को देख लेता है और उसके सौंदर्य पर मोहित होकर उसे अपनी हवस का शिकार बनाना चाहता है। वह एक दो बार रास्ते में ज्योति को छेड़ता है। ज्योति अपने शिक्षित होने से उत्पन्न स्वाभिमान और आत्मविश्वास के तहत उसे कड़ाई से मना कर देती है। इसे वह अपना अपमान समझता है और अपने पिता के समझाने के बावजूद ज्योति को किसी भी तरह से हासिल करने का प्रयास करता है। इसके लिए वह षड्यंत्र के तहत भोला का अपनी गाड़ी से एक्सीडेंट करा देता है। जब भोला हॉस्पिटल में अपने जीवन और मृत्यु का संघर्ष कर रहा होता है, तब वह ज्योति के सामने उसके शुभचिंतक होने का ढोंग करता है। लेकिन ज्योति कहीं से भी उसके जाल या छलावा में नहीं आती है। डॉक्टर जब यह कहते हैं कि भोला का ऑपरेशन करना होगा और भोला का जीवन संकट में है। तब ज्योति फिर से

छठी मैया को याद करती है और उसी स्थान पर जाकर प्रार्थना करती है, जहाँ पर उसके पिता भोला ने बेटी पाने के लिए छठी मैया की आराधना की थी। ज्योति अपने पिता की जिंदगी को बचाने के लिए छठी मैया से प्रार्थना करते हुए कहती है कि 'हे छठी मैया! आप मेरे पापा को बचा लीजिए, भले ही बदले में आप मेरे प्राण ले लीजिए। आप मेरे मन मंदिर की देवी हैं, लेकिन मेरे पापा मेरे भगवान हैं। हे देवी माँ, उनके बिना मेरी पूरी दुनिया वीरान है। इसलिए आप उन्हें जीवनदान दीजिए।'

"पापा के तू बचा ल, भले हमरो प्राण ले ल।...2
मन मंदिर के हऊ तू देवी, पापा हउएँ हमर भगवान हो।
उनके बिना हे देवी मईया, मोर दुनिया हवे वीरान हो।
पापा के तू बचा ल, भले हमरो प्राण ले ल।...2"[11]
(फिल्म का भोजपुरी गीत / भजन)

छठी मैया के आशीर्वाद से भोला की जिंदगी बच जाती है और भोला फिर से शादी की तैयारी प्रारंभ करता है। वह अपनी बेटी को बाजार के सारे काम करने और शादी का कार्ड छपवाने की ज़िम्मेदारी देकर समझा बुझा कर भेजता है। जब कार्ड छप कर आ जाता है, तब वह पहला कार्ड छठी मैया को अर्पित करने के बाद दूसरा कार्ड लेकर अपने भाई को देने उनके घर जाता है। वह उन्हें कार्ड देकर प्रार्थना करता है कि आप भाभी के साथ इस शादी में शामिल होइए और मेरी ज्योति का माँ और पिता बनकर कन्यादान कीजिए। भोला के इस अनुरोध पर उसके बड़े भाई नाराज हो जाते हैं और फिर से अपनी पत्नी पर उसके नि:संतान होने का, बाँझ होने का तोहमत लगाते हैं। अपनी भाभी पर झूठे बाँझिन होने का तोहमत लगते देखकर भोला के सब्र का बाँध टूट जाता है। वह दुखी होकर अपने भाई को सच्चाई बताने का फैसला करता है। वह अपनी भाभी से पूछता है कि "आखिर कब तक आप बर्दाश्त करती रहेंगी। अरे! सच्चाई बताती क्यों नहीं हैं? बर्दाश्त करते-करते जवानी से बुढ़ापा आ गया। कम से कम अब तो आप सच्चाई बता दीजिए।" इस पर बड़े भाई को आश्चर्य होता है। वे पूछते हैं कि "कैसी सच्चाई?" तब भोला कहता है कि "अगर आप सच्चाई जानना चाहते हैं, तो सुनिए। भौजी माँ बन सकती थीं, लेकिन आप बाप नहीं बन सकते थे। डॉक्टर की मेडिकल चेकअप के अनुसार भौजी माँ बन सकती थीं, पर आप बाप नहीं बन सकते थे। जवानी से बुढ़ापे तक यह स्त्री (भाभी) सिर्फ आपके झूठे अहंकार, झूठे मान, झूठे सम्मान के लिए अपने ऊपर कलंक लेकर जीती रहीं। लेकिन आपसे कुछ ना कहा। और हाँ, मेरी बेटी को आप जैसे पापा की जरूरत नहीं है और नही मुझे आप जैसे भाई की।"[12]

इस सच्चाई को सुनकर बड़े भाई के होश उड़ जाते हैं। उन्हें अपनी गलती का एहसास होता है। उन्हें लगता है कि वे पूरी जिंदगी अपनी पत्नी के साथ अन्याय करते रहे। इसके बाद वे अपनी पत्नी के पास जाते हैं और उस से माफी माँगते हुए कहते हैं: "इस संसार में सिर्फ एक औरत ही अपने पति के हर गुनाह, हर पाप, हर अत्याचार को अपने दिल में दबा के रखती है लेकिन कभी भी उफ्फ नहीं करती है। मैं कितना अभागा हूँ कि अपनी देवी जैसी पत्नी के प्यार को नहीं समझ सका और नही उस पागल (छोटे भाई) के प्यार को। मुझे माफ कर दो।"[13] उनकी पत्नी उन्हें माफ कर देती है। अपनी गलती का एहसास होने के बाद बड़े भाई पश्चाताप करने लगते हैं और फिर अपनी पत्नी से माफी माँगने के बाद वे अपने छोटे भाई भोला के पास जाते हैं और उस से भी माफी माँगते हैं। बड़े भाई द्वारा माफी माँगने के बाद भोला के दिल से सारा मैल मिट जाता है और वह अपने बड़े भाई को कहता है कि "मैं तो आप को भगवान मानता हूँ और मैं अपने भगवान से कैसे नाराज हो सकता हूँ।" उसके बाद उनके दिल से सारे मैल धुल जाते हैं। दोनों भाई रोते हुए एक दूसरे के गले लगते हैं। उसके बाद बड़े भाई हँसी खुशी अपने घर से भोला की बेटी ज्योति का विवाह करते हैं। तब विवाह के सारे रस्म आनंदपूर्वक संपन्न किए जाते हैं। लेकिन इसी बीच भोला के मालिक का बेटा हथियारों के साथ आकर लग्न मंडप से ज्योति का अपहरण करने का प्रयास करता है। वह हथियारों के बल पर जबरदस्ती उसका अपहरण करने का प्रयास करता है जिसे रोकने का भरसक प्रयास भोला करता है। लेकिन गुंडे भोला की पिटाई करते हैं और भोला छठी मईया को याद करता है। छठी मईया के आशीर्वाद से भोला उन सभी गुंडों को मारकर भगा देता है और अपनी बेटी की रक्षा करता है।

इस संकट के समय में सभी लोग छठी माई को याद करते हैं। ऐसे समय में छठी माई प्रत्यक्ष अवतरित होती हैं और अपने प्रकट होने का कारण स्पष्ट करती हुई भारतीय समाज में बेटियों के प्रति होने वाले भेदभाव, अन्याय और अत्याचार को स्पष्ट करती हुई उसे मिटाने की बात करती हैं। वे स्पष्ट कहती हैं कि पुत्र और पुत्री में कोई भेदभाव न करे और पुत्रियों (स्त्रियों) को भी उज्जवल भविष्य दे।- "भोला, धन्य तुम नहीं, धन्य मैं हो गई तुम्हारे जैसा भक्त पाकर और यह दर्शन तुम लोगों की वजह से नहीं, भोला की वजह से हुआ है। भोला एक सच्चा और साफ हृदय वाला इंसान है। ऐसे भक्तों के लिए हम देवी देवताओं को भी दर्शन देने पड़ते हैं। मैं ही दुर्गा, मैं ही काली, मैं ही सरस्वती और मैं ही लक्ष्मी, माँ, पत्नी और बेटी भी मैं ही हूँ। यह जानते हुए भी कि बिना नारी के सृष्टि नहीं चल सकती है, फिर भी कन्याओं को जन्म देने से पहले ही गर्भ में मार दिया जाता है। लोग हम देवी देवताओं से पुत्र माँगते हैं, पुत्री नहीं। वे भूल जाते हैं कि पुत्र को जन्म देने वाली माँ एक स्त्री है। पुत्र की कलाई में राखी बाँधने वाली बहन एक स्त्री है। पुत्र की कुल मर्यादा को लेकर आगे बढ़ने वाली पत्नी एक स्त्री है। लेकिन फिर भी वे पुत्र चाहते हैं, वे पुत्र माँगते हैं। और एक भोला जो मंदबुद्धि होते हुए भी हम से पुत्री माँगा, पुत्र नहीं। भला में इसके इच्छा को कैसे न पूरा करती।

खुशनसीब है वह परिवार जिनके घर में हम कन्या के रूप में जन्म लेते हैं तो पुत्र और पुत्री में कोई भेदभाव न करें और पुत्रियों (स्त्रियों) को भी उज्जवल भविष्य दें। भोला तथास्तु।"[14]

फिल्म एक आधुनिक कला माध्यम है जिसमें नाटक, साहित्य, नृत्य, संगीत, गायन, वादन, शृंगार आदि कई कला विधाओं का मेल होता है। फिल्म निर्माण की प्रक्रिया जटिल होती है। इसमें बहुत सारे विधाओं के बहुत सारे लोगों का योगदान होता है। कुछ लोग जहाँ पर्दे पर उपस्थित होकर अभिनय करते दिखाई देते हैं तो उससे कहीं ज्यादा लोग पर्दे के पीछे अदृश्य रह कर फिल्म निर्माण में अपना योगदान देते हैं। इस फिल्म में स्त्री की भूमिका क्या और कैसी है? इसे देखने, जानने और समझने के लिए इस फिल्म के निर्माण की प्रक्रिया को दो भागों में बाँट कर समझा जा सकता है? एक पर्दे के पीछे स्त्री की भूमिका और दो पर्दे के ऊपर स्त्री की भूमिका। जहाँ तक पर्दे के पीछे की बात है तो यह फिल्म निर्माण का तकनीकी पक्ष होता है जिसकी वजह से किसी भी फिल्म का निर्माण संभव हो पाता है। इसके अंतर्गत निर्माता, निर्देशक, पटकथा लेखक, गीतकार, संगीतकार, नृत्य निर्देशक (कोरियोग्राफी), फिल्मांकन, फाइटिंग आदि की महत्वपूर्ण भूमिका मानी जाती है। बिना इनके सक्रिय सहयोग के कोई भी फिल्म पूर्ण नहीं हो सकती है, अपना वास्तविक रूप और आकार ग्रहण नहीं कर सकती है और न ही पर्दे का मुँह देख सकती है। फिल्म निर्माण के ये वो वास्तुकार हैं जो कभी भी पर्दे के ऊपर दिखाई नहीं देते हैं पर जिनके सहयोग के बिना पर्दे पर कुछ भी घटित नहीं होता है। ये वे लोग हैं जो अदृश्य रह कर फिल्म को सजीव बनाते हैं, उसमें जान फूँकते हैं। हाँ यह सच है कि सभी फिल्म के प्रारंभ में इनका नामोल्लेख किया जाता है और उनके महत्व और योगदान को सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाता है। बिना इनके सहयोग से कोई फिल्म बन ही नहीं सकती है।

भोजपुरी फिल्मों का इतिहास बताता है कि पर्दे के पीछे रहकर फिल्म निर्माण के तकनीकी पक्ष की भूमिका में स्त्रियों की उपस्थिति नगण्य है। इस फिल्म के निर्माण के क्षेत्र में भी स्त्री की भूमिका बहुत सीमित है। इस फिल्म के निर्माता दीपक शाह और निर्देशक सुजीत वर्मा पुरुष हैं। गीतकार- प्यारेलाल यादव, आज़ाद सिंह और मुन्ना दुबे, संगीतकार- धनंजय मिश्रा और अविनाश झा घुँघरू, पटकथा लेखक- यश कुमार और एस के चौहान, नृत्य- पप्पू खन्ना, कनु मुखरी और रामदेव, फाइट- दिलीप यादव, छायांकन (कैमरा)-आर आर प्रिंस आदि सभी पुरुष हैं। इस फिल्म में 5 गायकों और 5 गायिकाओं, कुल 10 व्यक्तियों ने पार्श्व गायन किया है। यश कुमार, गोपाल राय, श्याम देहाती, आलोक सिंह और प्रतीक राज ने जहाँ पुरुष पार्श्व गायन का कार्य किया है वहीं खुशबू जैन, पामेला जैन, वर्षा तिवारी, प्रियंका सिंह और नीतू सिंह ने स्त्री पार्श्व गायन का कार्य किया है।[15] इस फिल्म में एकमात्र गायन का ही क्षेत्र ऐसा है जिसमें महिलाओं की बराबर की भूमिका

दिखाई पड़ती है। इसका कारण शायद यह है कि युगल गानों और महिला पात्रों पर फिल्माए गए गानों में स्त्री आवाज की आवश्यकता होती है। स्त्री पात्रों के लिए स्त्री आवाज में पार्श्व गायन की प्राकृतिक आवश्यकता शायद वह मजबूरी है जिसकी वजह से निर्माता और निर्देशक को स्त्री आवाज के लिए गायिकाओं को फिल्म निर्माण के तकनीकी पक्ष में स्थान देना पड़ता है। वरना यदि यह कार्य किसी पुरुष के द्वारा संपन्न कर पाना संभव होता तो शायद स्त्री आवाज को या गायिकाओं को याद भी नहीं किया जाता। ठीक उसी तरह साज सज्जा, सिंगार (मेकअप) आदि वे कतिपय क्षेत्र हैं जहाँ परस्त्री की कुछ भूमिका दिखाई पड़ती है। परंतु इस फिल्म में तो वह भी नदारद है। तब केवल एक मात्र गायन का ही वह तकनीकी क्षेत्र है जहाँ इस फिल्म में महिलाओं की बराबरी की उपस्थिति है। बाकि तकनीकी क्षेत्र में तो महिलाओं के लिए सन्नाटा ही है।

अगर हम पर्दे के ऊपर स्त्री पात्रों की संख्या और उनकी भूमिकाओं को देखें तो यह जरूर स्वीकार करना पड़ेगा कि भोजपुरी फिल्मों में स्त्री पात्रों को महत्वपूर्ण भूमिकाएँ तो नहीं लेकिन संख्या के आधार पर उचित प्रतिनिधित्व दिया जाता है क्योंकि भोजपुरी फिल्म सामाजिक और पारिवारिक कथानक पर केंद्रित होती हैं और कोई भी समाज और परिवार स्त्री और पुरुष के मेल से ही बनता है। इसलिए स्त्री पात्रों की भूमिका के निर्वहन के लिए स्त्री कलाकारों को अभिनय का अवसर प्रदान किया जाता है। इस फिल्म में भी कुल 24 कलाकार (पात्र) हैं जिनके नामों का उल्लेख फिल्म के प्रारंभ में किया गया है इसमें से 11 स्त्री कलाकार (पात्र) हैं और 13 पुरुष कलाकार (पात्र) हैं।[16] अगर प्रतिशत के आधार पर देखा जाए तो स्त्री पात्रों की संख्या 45.83 प्रतिशत है जो एक संतोषजनक स्थिति मानी जा सकती है। यद्यपि यह पूरी तरह से बराबरी की संख्या और प्रतिशत नहीं है और न ही इसकी आवश्यकता है क्योंकि पटकथा के आधार पर ही स्त्री और पुरुष पात्रों की संख्या तय होती है। इस फिल्म में स्त्री और पुरुष पात्रों की संख्या के अनुपात की यह स्थिति आदर्श मानी जा सकती है।

अब आइए जरा पर्दे के ऊपर स्त्री पात्रों के चरित्र और भूमिकाओं के साथ किस तरह का व्यवहार किया गया है, उसपर एक नजर डाली जाए। यह फिल्म एक नायक प्रधान फिल्म है जिसका नायक भोला है और पूरी फिल्म इसी नायक के जीवन के चारों तरफ घूमती है। भोला एक अनाथ लड़का था। जब एक बार वह गाँव के प्रधान के पिता के गाड़ी के नीचे आ जाता है और घायल हो जाता है। इस दुर्घटना की वजह से सर पर चोट लगने के कारण ही वह मंदबुद्धि हो जाता है। गाँव के प्रधान के पिता उसे अपने साथ अपने घर लाते हैं और उसे अपने घर में बेटे की तरह रखते हैं। मरने के समय वे अपने वास्तविक बेटे (गाँव के प्रधान) को भोला का ध्यान रखने को कह कर जाते हैं। भोला के जीवन में तीन प्रमुख स्त्रियाँ आती हैं और भोला तीनों का ही आदर-सम्मान करता है। उसके जीवन में आने वाली पहली स्त्री उसके बड़े भाई की पत्नी (भाभी) है, जिसका वह बहुत आदर और सम्मान करता है। वह उन्हें अपनी माँ की तरह देखता है और उनसे स्नेह करता है क्योंकि उसकी नि:संतान भाभी ने अपनी सारी ममता भोला के ऊपर ही लुटाई थी। इसलिए अपने

भाभी के सुख-दुख से भोला सहज रूप से जुड़ा हुआ महसूस करता है। वह हमेशा चाहता है कि उसकी भाभी को संतान की प्राप्ति हो जो उसके भाई के शारीरिक असमर्थता के कारण संभव नहीं होता है। जब भी कोई उसकी भाभी को बाँझ कहता है तो वह क्रोधित हो जाता है। जब भोला के भैया अपनी पत्नी को बाँझ कहते हैं तो वह मन मसोसकर रह जाता है। लेकिन वह अपनी भाभी का हमेशा आदर और मान सम्मान करता है।

जो दूसरी स्त्री पात्र भोला के जीवन में आती है, वह इस फिल्म की नायिका अंजू (अंजना सिंह) है। प्रारंभ में नायिका अंजू, भोला के मंदबुद्धि होने का मजाक उड़ाती है। एक बार वह भोला को परेशान करने के लिए उससे झूठ मूठ का कह देती है कि अगर भोला दिन भर एक पैर पर खड़े होकर धूप में ईश्वर की प्रार्थना करे तो उसकी भाभी को संतान की प्राप्ति हो सकती है। उसकी बातों को सच मानकर भोला ऐसा ही करता है और इस प्रयास में उसकी तबीयत खराब हो जाती है। नायिका को जब अपनी गलती का एहसास होता है और वह भोला की सच्चाई, प्रेम, दया, त्याग, परदुखकातरता, ईमानदारी, कर्मठता और भक्ति को समझती है तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है। तब वह भोला की तरफ आकर्षित होती है और भोला से विवाह करना चाहती है। वह अपने पिता को अपनी शादी भोला से तय करने के लिए समझाती है और अंततः उसके पिता भी भोला से उसके विवाह को राजी हो जाते हैं।

लेकिन इसी बीच में भोला के जीवन में एक तीसरी स्त्री पात्र (बालिका) का आगमन होता है। वह एक नवजात अनाथ बालिका है जिसे कोई गाँव के मंदिर की सीढ़ियों पर छोड़ जाता है। भोला उसे रोता बिलखता हुआ नहीं देख पाता है। भोला उसे अपनी गोद में उठा लेता है और उसे अपनी बेटी की तरह पालने का निश्चय करता है। भोला के इस निश्चय से जहाँ एक ओर उसके भाई उसे घर से निकाल देते हैं तो दूसरी ओर उसकी तय शादी टूट जाती है। भोला के होने वाले ससुर और प्रेमिका उसे समझाते हैं कि वह उस अनाथ बच्ची को अनाथालय में भेज दे वरना वे शादी नहीं करेंगे। भोला अपनी प्रेमिका अंजू को समझाते हुए कहता है कि "अनाथ होने का दुख क्या होता है, क्या तुम्हें पता है? मुझे पता है। अपने जीते जी मैं इस लड़की को अनाथ नहीं होने दूँगा। इसकी माँ और बाप दोनों बनकर इसे पालूँगा।... जिंदगी का सुख धन दौलत से नहीं होता है बाबू जी। और मैं इतना स्वार्थी नहीं हूँ कि अपने सुख के लिए इस मासूम की जान को दुख की दरिया में छोड़ दूँ। अंजू तुम तो मेरी जिंदगी में आने वाली हो पर यह तो आ चुकी है। अब तुम ही बताओ मैं क्या करूँ?"[17] उसकी इस बात पर नाराज होकर भोला के ससुर अपनी बेटी से उसकी शादी तोड़ देते हैं। भोला की प्रेमिका भी अपनी शादी को तोड़ने की मौन स्वीकृति और सहमति देती है। लेकिन जाने से पहले वह भोला के पास आती है और उससे कहती है कि "आज तक मैंने देवता सिर्फ टीवी में, कैलेंडर में, मंदिर की मूरत में देखी है। लेकिन आज पहली बार मैं देवता साक्षात देख रही हूँ। हाँ, अपना सुख तो

सभी लोग चाहते हैं, लेकिन दूसरों का सुख सिर्फ देवता चाहते हैं। हाँ भोला, आज के बाद मैं तुम्हें चाहुँगी नहीं, बल्कि आज के बाद तुम्हारी पूजा करूँगी और यही चाहुँगी कि अगले जन्म में मैं भी तुम्हारी बेटी बनूँ।"[18] भोला मन मसोसकर अपनी प्रेमिका को शादी करके किसी और की पत्नी बनकर जाते हुए देखता रह जाता है। लेकिन वह उस तीसरी स्त्री पात्र, जो एक नवजात बच्ची है, को अपने कलेजे से दूर नहीं करता है। वह उस बच्ची का लालन-पालन अपनी बेटी की तरह करता है और उसे माँ और पिता दोनों का प्यार देता है। उसे पढ़ा लिखा कर बड़ा इंसान बनाना चाहता है। वह रात दिन मेहनत मजदूरी कर अपनी बेटी का भविष्य उज्जवल बनाने का सार्थक और सफल प्रयास करता है। उसकी बेटी ज्योति भी इस बात को खूब अच्छी तरह समझती है और उसे भगवान की तरह पूजती है क्योंकि उसे पता है कि अगर भोला ने उसे नहीं अपनाया होता, उसे अपने गले से नहीं लगाया होता और उसे अपने घर में स्थान नहीं दिया होता तो उसकी जीवन लीला कब की समाप्त हो गई होती। उसे जन्म देने वाले उसके अपने माँ-बाप तो उसे मरने के लिए अकेला छोड़ कर चले गए थे। इसीलिए जब वह कॉलेज जाने लगती है और प्रकाश से उसे प्यार होता है और जब भोला इस बात को जानकर दुखी होता है तो वह अपने पिता को समझाती हुई स्पष्ट कहती है कि "नहीं पापा, प्रकाश ऐसा लड़का नहीं है। वह तो एक बहुत बड़े खानदान का संस्कारी लड़का है और आप हमारे भगवान हैं। मैं आप के सम्मान को कभी भी ठेस नहीं पहुँचा सकती हूँ। आपने एक अनाथ को अपना नाम दिया। उसे दुनिया में सिर उठा कर जीने लायक बनाया। मेरे खातिर आपने अपनी पूरी जिंदगी कुर्बान कर दी। ठीक है, कल मैं प्रकाश को बुला लेती हूँ। आप भी उससे मिल लीजिए। अगर वह आपको पसंद आएगा तो ठीक है। वरना आप जैसे पापा के ऊपर उस जैसे हजारों प्रकाश कुर्बान हैं।"[19] (हिंदी अनुवाद) स्पष्ट है कि भोला के जीवन में आने वाली इन तीनों ही स्त्री पात्रों को लेकर भोला काफी संवेदनशील है। वह इन तीनों ही स्त्री पात्रों के मान-सम्मान की रक्षा करता है। वह हमेशा उनकी हित चिंता करता है। वह हमेशा उनकी मदद को तत्पर रहता है और उनके विकास का प्रयास करता है। इसीलिए ये तीनों स्त्री पात्र भोला के इसी सच्चाई, प्रेम, दया, त्याग, बलिदान, परदुखकातरता, ममता, ईमानदारी, कर्मठता, स्वाभिमान और भक्ति आदि को देखकर उन्हें भगवान का दर्जा देती हैं, उसका आदर और सम्मान करती हैं।

इस फिल्म में स्वाभाविक रूप से स्त्री पात्रों की तुलना में पुरुष पात्र भोला (नायक) को अधिक महत्व दिया गया है क्योंकि वह स्त्री की स्वतंत्रता, समानता, मान-सम्मान, मर्यादा, गरिमा आदि को मन वचन कर्म से समर्थन देता है, उसे एक ऊँचाई तक पहुँचाता है। यद्यपि यह एक सामाजिक और पारिवारिक फिल्म है लेकिन इस फिल्म में एक खलनायक भी है जो स्त्री का एकदम सम्मान नहीं करता है। वह भोला की बेटी ज्योति को देखकर उसका शारीरिक शोषण करना चाहता है। इसलिए वह उसे अपनी झूठी बातों में फँसाकर उसका शारीरिक शोषण करना चाहता है। जब

ज्योति उसे दुत्कार देती है तब पहले तो वह भोला का अपनी गाड़ी से एक्सीडेंट कराता है और फिर ज्योति की शादी के दिन पहुँच कर उसमें बाधा खड़ी करता है। यह इस फिल्म का क्लाइमैक्स है। जब खलनायक अपने गुंडे दोस्तों और हथियार के बल पर सभी के सामने शादी के मंडप से ज्योति को उठाकर ले जाना चाहता है। यह भोला की परीक्षा की घड़ी होती है कि वह हथियारों के डर से चुप हो जाए या अपनी बेटी के मान सम्मान की रक्षा के लिए कुछ करे। भोला पहले तो खलनायक के पैर पड़ता है। उससे अनुरोध करता है कि उसकी बेटी को छोड़ दे, उसकी बेटी की जिंदगी को बर्बाद ना करे। जब खलनायक और उसके दोस्त उसे मारते हैं, तब भोला अपने धार्मिक विश्वासों एवं आस्था को परखता है, वह संकट की इस घड़ी में छठी माई को मदद के लिए गुहारता है। यहाँ से कहानी थोड़ी धार्मिक व अंधविश्वासी हो जाती है क्योंकि जब भोला गुंडों की ताकत का अकेला मुकाबला नहीं कर पाता है और गाँव, समाज और परिवार के लोग गुंडों के हथियारों के भय से खामोश हो जाते हैं तब वह छठी माई को याद करता है और छठी माई उसकी मदद करती हैं। वे अपनी अलौकिक शक्तियाँ भोला को प्रदान करती है जिसके दम पर भोला उन गुंडों को बुरी तरह मारकर भगा देता है और अपनी बेटी की मान सम्मान और इज्जत की रक्षा करता है। इसके बाद छठी मईया स्वयं प्रकट होती हैं और भारतीय समाज में स्त्री के साथ होने वाले भेदभाव को गलत बताती हुई उसे समाप्त कर स्त्रियों को भी पुरुष के बराबर अधिकार देने की बात करती हैं।

इस फिल्म का शीर्षक 'बिटिया छठी माई के' है। फिल्म का यह शीर्षक ही इस फिल्म की भावनाओं को पूरी तरह से उजागर करता है कि कैसे इस फिल्म में स्त्री की महत्वपूर्ण भूमिका है और भोला की बेटी ज्योति छठी माई द्वारा दिया गया उपहार और आशीर्वाद है। देवी द्वारा दिये गए आशीर्वाद का मान रखा जाता है, उसे त्यागा या फेंका नहीं जाता है, उसके साथ अन्याय और अत्याचार नहीं किया जाता है, उसे अपमानित नहीं किया जाता है, उसे मरने के लिए नहीं छोड़ दिया जाता है। इसलिए भोला अपने धार्मिक विश्वासों के कारण उस अनाथ बच्ची को अपने गले से लगाता है, उसे पाल पोस कर बड़ा करता है और पढ़ा लिखाकर उसके भविष्य को संवारता है। भोला की स्त्री के प्रति उदारता, सहानुभूति, दया, त्याग, मान सम्मान की रक्षा करने का भाव के कारण यह फिल्म स्त्री अस्मिता का नवीन उदाहरण प्रस्तुत करती है जिसमें एक पुरुष अपने रूढ़ परंपरागत भारतीय संस्कारों को त्याग कर स्त्री का एक नवीन चरित्र गढ़ता है। वह स्त्री को सदैव आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील रहता है। वह हमेशा स्त्री के संरक्षक और पिता के रूप में उसके मददगार की भूमिका में होता है।

इस फिल्म में दो प्रकार के स्त्री पात्र देखने को मिलते हैं। एक परंपरागत भारतीय स्त्री पात्र है तो दूसरे 21वीं सदी के भारत में निर्मित हो रही आधुनिक स्त्री पात्र है। परंपरागत भारतीय स्त्री पात्र का प्रतिनिधित्व नायक की भाभी और ग्राम प्रधान की पत्नी करती हैं। वे परंपरागत भारतीय

मानसिकता और सोच से संचालित होने वाली नारी हैं, जो अपने पति को परमेश्वर मानती हैं और उनकी खुशी में ही अपनी खुशी समझती है। वे हर स्थिति में अपने पति का ही साथ देती हैं। अगर पति गलत भी होता है तो भी वे उसका विरोध करने का साहस नहीं कर पाती हैं। यहाँ तक की इस विषय में सोचना भी नहीं चाहती हैं। उनके परंपरागत भारतीय संस्कार उन्हें हर हाल में अपने पति को परमेश्वर मानने का सीख देते हैं और उसकी आज्ञा को हमेशा शिरोधार्य मानते हैं। नायक की भाभी ये जानती हैं कि उनके माँ न बन पाने का कारण उनके पति की शारीरिक कमजोरी है। लेकिन फिर भी वे इस बातको अपने पति से नहीं कहती हैं। बल्कि इसके विपरीत स्वयं ताउम्र अपने पति से बाँझ होने का आरोप और ताना सुनती हुई अपनी पूरी जिंदगी गुजार देती हैं। यहाँ तक की महिला डॉक्टर की सलाह को भी वे मानने से इंकार कर देती हैं और उनसे स्पष्ट कहती हैं कि "नहीं डॉक्टर साहिबा! मैं बाँझ का कलंक लेकर पूरी जिंदगी जी सकती हूँ। परंतु अपने पति के मान सम्मान को ठेस पहुँचा कर एक पल भी नहीं जी पाऊँगी। मैं उनसे ऐसी कोई भी बात नहीं कर सकती हूँ जिनके कारण उनका सिर शर्म से झुक जाए।... मेरा पति ही मेरा सब कुछ है।"[20] (हिंदी अनुवाद) वे अपने पति की खुशी में ही अपनी खुशी देखती हैं। इसीलिए जब फ्रांसीसी लेखिका और दार्शनिक सिमोन द बोउआर यह कहती हैं कि "स्त्री पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है।"[21] सिमोन का यह भी मानना था कि "स्त्रियोचित गुण दरअसल समाज व परिवार द्वारा लड़की में भरे जाते हैं, क्योंकि वह भी वैसे ही जन्म लेती है जैसे कि पुरुष और उसमें भी वे सभी क्षमताएं, इच्छाएं, गुण होते हैं जो कि किसी लड़के में।"[22] तब इस फिल्म के प्रधान की पत्नी के चरित्र और उनकी सोच को देखकर उस मानसिकता को सहज ही समझा जा सकता है कि किस प्रकार भारतीय समाज में हजारों सालों से स्त्रियों के मन में यह बात बैठा दी गयी है कि उसका पति ही परमेश्वर है, वह हर हाल में सही होता है और उसकी आज्ञा का पालन करना भारतीय पत्नी का एकमात्र कर्तव्य होता है। तब उसके किसी गलती पर विरोध का सवाल ही कहाँ उठता है?

इस फिल्म की दूसरी महत्वपूर्ण स्त्री पात्र नायक की बेटी ज्योति है। यह 21वीं शताब्दी में भारत में निर्मित हो रहे स्त्री चरित्रों का प्रतिनिधित्व करती है। वह एक पढ़ी लिखी स्त्री है। वह अपने पिता की इच्छा के अनुसार अपनी पढ़ाई को पूर्णकर बड़ा आदमी बनना चाहती है और अपने भविष्य को सुरक्षित करना चाहती है। वह अपनी मेहनत के बल पर 12वीं की परीक्षा में पूरे जिले में टॉप करती है और आगे की पढ़ाई के लिए कॉलेज में दाखिला लेती है। वह साइकिल से कॉलेज जाती है। वह अपनी शादी के फैसले भी खुद ही करती है और खुद से अपने लिए लड़के का चयन करती है। वह अपने पिता को अपनी शादी के लिए राजी भी करती है और शादी तय हो जाने के बाद शादी की तैयारी में भी मदद करती है। उसमें शिक्षा के कारण इतना आत्मविश्वास और साहस जाग्रत हो गया है कि वह गलत का मुखर विरोध कर सकती है। इसलिए जब इस फिल्म का

खलनायक उसे रास्ते में रोककर छेड़ता है तो वह उसे बुरी तरह से झिड़क देती है। वह 21वीं शताब्दी के भारत में बन रहे आधुनिक स्त्री का प्रतिबिंब है।

स्त्री पात्रों की तरह ही इस फिल्म में पुरुषों के भी दो प्रकार के चरित्र दिखाई देते हैं। एक परंपरागत भारतीय पुरुष का तो दूसरा आधुनिक भारतीय पुरुष का। इस फिल्म के नायक के भाई और गाँव के प्रधान परंपरागत भारतीय पुरुष चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अपने को हर हाल में सही समझते हैं और बिना सच जाने अपनी पत्नी तक को सार्वजनिक रूप से बाँझ कहने में संकोच नहीं करते हैं। जबकि सच्चाई इसके विपरीत है। वे खुद शारीरिक रूप से असमर्थ हैं। वे खुद पिता नहीं बन सकते हैं। लेकिन बिना सच्चाई जाने वे अपनी पत्नी को माँ न बन पाने के लिए दोषी ठहराते रहते हैं। यहाँ तक कि वे डॉक्टर से जाँच कराकर सच्चाई जानने और समझने का भी प्रयास नहीं करते हैं। ठीक उसी प्रकार वे अपने भाई के साथ भी अन्याय करते हैं। जब उनका छोटा भाई भोला एक अनाथ नवजात बच्ची को अपने गले से लगा लेता है और उसे पालने का फैसला करता है तो वे उस बच्ची को दूसरे का पाप कहकर बच्ची के साथ-साथ भोला को भी घरसे निकाल देते हैं। लेकिन आगे चलकर बरसों बाद भोला के समझाने और सच्चाई से अवगत कराने पर उन्हें अपनी गलती का अहसास होता है और तब वे अपनी पत्नी और भोला दोनों से माफी माँगते हैं। वे अपने झूठे दंभ और अहंकार में अपने छोटे भाई की बेटी की शादी का निमंत्रण और अनुरोध भी प्रारंभ में अस्वीकार कर देते हैं जिसमें भोला उन्हें अपनी बेटी ज्योति के शादी में पिता की भूमिका निभाने और कन्यादान करने का अनुरोध करता है।

इस फिल्म का नायक भोला यद्यपि एक मंदबुद्धि इंसान है। लेकिन वह अपनी सोच में भारतीय समाज के आधुनिक पुरुष का प्रतिनिधित्व करता है। वह हर सही और गलत को समझता है। वह सही का समर्थन करता है तो गलत का विरोध भी करता है। वह हमेशा अपनी भाभी के पक्ष में रहता है और अपने भाई पर अपनी पत्नी को बाँझ कहने पर क्रोध करता है। अंत में जब उसका क्रोध अपनी सीमाओं का उल्लंघन कर जाता है तो वह अपनी भाभी के दिए हुए कसम को तोड़कर अपने भाई को सच्चाई से अवगत करा देता है कि 'भाभी के माँ न बन पाने का कारण भाभी नहीं बल्कि आप (बड़ा भाई) हैं।'

भोला अविवाहित होते हुए भी मंदिर की सीढ़ियों पर फेंकी गई एक अनाथ नवजात बच्ची को गोद लेता है और उसे पालने का फैसला करता है। वह अपनी आर्थिक सीमाओं के बावजूद उस बच्ची को पढ़ा लिखा कर एक बड़ा इंसान बनाना चाहता है और सारी तकलीफ उठाकर भी उसे पूरा करता है। इस फिल्म में उसके संपूर्ण जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपनी बेटी ज्योति को पढ़ा लिखा कर एक बड़ा आदमी बनाना है। इसके लिए वह कड़ी मेहनत करता है और अपने सारे सुख सुविधाओं का त्याग करके ज्योति के जीवन को संवारने और सफल बनाने में लग जाता है। यहाँ तक कि वह अपने घर वालों और गाँव के लोगों के समझाने के बावजूद ज्योति को अनाथालय नहीं भेजता है।

परिणाम स्वरूप उसकी प्रेमिका उसे छोड़ देती है और उसकी शादी टूट जाती है। अगर भोला के संपूर्ण जीवन को ध्यान से देखा जाए तो उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य अपनी बेटी ज्योति के जीवन को सार्थकता, संपूर्णता और सफलता प्रदान करना दिखाई देता है। भोला का व्यक्तित्व 21वीं शताब्दी के भारतीय पुरुष का प्रतिबिंब जान पड़ता है जो आधुनिक विचारों से लैस है, जो परंपरागत रूढ़ मान्यताओं को त्याग चुका है, जो सच्चाई को गले लगाता है। भोला हर स्थिति में परंपरागत भारतीय रूढ़ मान्यताओं का विरोध करता है, स्वस्थ वर्तमान का साथ देता है और स्वर्णिम भविष्य के निर्माण के लिए संघर्ष करता है जिससे आधुनिक भारतीय नारी का नवीन चरित्र निर्मित किया जा सके। उसकी बेटी ज्योति इसकी जीती जागती मिसाल है। भोला बिना जाति और धर्म को जाने अनाथ ज्योति को अपने गले लगाता है, उसे अपने घर ले आता है, उसका लालन पालन अच्छे से करता है और उसे पढ़ा लिखा कर एक योग्य आधुनिक भारतीय नारी बनाता है। जहाँ पढ़े-लिखे चतुर लोग उस बच्ची को अनाथालय भेजने का उसे सलाह देते हैं, वहाँ वह उन सब की बातों को अनसुना कर उसे अपने घर ले आता है। परिणाम स्वरूप पढ़े-लिखे चतुर लोग (बड़ा भाई) उसे घर से, तो कोई (होने वाले ससुर और प्रेमिका) उसे अपनी जिंदगी से ही हमेशा के लिए निकाल बाहर करते हैं। वह ज्योति का विवाह भी देख सुन समझ कर प्रकाश से तय करता है। वह हमेशा अपने भाई की गलत बातों का विरोध करता है और अपनी भाभी का समर्थन करता है। भोला एक धार्मिक इंसान है जो भारतीय देवियों में स्त्री का स्वरूप और भारतीय स्त्रियों में देवी का स्वरूप देखता है। स्त्रियों का सम्मान करना और उसके चरित्र को आदर्श रूप में गढ़ना उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य प्रतीत होता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भोजपुरी फिल्म 'बिटिया छठी माई के' सामाजिक विषय पर बनी एक सफल फिल्म है, जो समाज को एक बड़ा संदेश देती है। यह फिल्म एक नायक प्रधान फिल्म है। परंतु ऐसा लगता है कि इस फिल्म के नायक भोला के जीवन का एकमात्र लक्ष्य अनाथ ज्योति को पाल पोसकर, पढ़ा लिखाकर बड़ा इंसान बनाना है औरउसके मार्फत से भारतीय स्त्रियों की समस्याओं को संबोधित करना और स्त्रियों की अस्मिता को एक नई पहचान दिलाना है। इसीलिए इस फिल्म की ऑनलाइन समीक्षा करते हुए लिखा गया है कि "बिटिया छठी माई के भोजपुरी सिनेमा के अन्य कमर्शियल फ़िल्मों से अलग, द्वीअर्थी संवाद व आइटम सोंग से अलग अश्लीलता मुक्त, पारिवारिक फिल्म की कहानी महिला सशक्तिकरण और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ की मुहीम को आगे बढ़ाने वाली लगती है।"[23] इस फिल्म के नायक भोला के चरित्र में भक्ति भी है, त्याग भी है, दया भी है, साहस भी है, भोलापन भी है, सहानुभूति भी है, सच्चाई भी है, कर्मठता भी है, मर्यादा भी है, त्याग भी है, परदुखकातरता भी है और इस सबका एकमात्र लक्ष्य स्त्री मात्र का

सम्मान और कल्याण करना है। इसलिए इस फिल्म की दोनों नायिकाएँ (प्रेमिका अंजु और बेटी ज्योति), जो उसके जीवन में आती हैं उसे भगवान का दर्जा देती हैं। भारतीय समाज में अगर सभी पुरुष चरित्र भोला जैसे हो जाएँ तो भारतीय स्त्री की सभी समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा। भोला का जीवन स्त्री अस्मिता और स्त्री सशक्तिकरण की अग्नि की समिधा है जो अपने जीवन को स्वाहा करके भी स्त्री जीवन को प्रकाशमान बनाता है और भोजपुरी समाज के साथ-साथ भारतीय समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करता है।

अभिस्वीकृति: प्रस्तुत शोध आलेख MHRD/ ICSSR द्वारा प्रायोजित IMPRESS शोध परियोजना के अंतर्गत किये जा रहे अनुसंधान का एक अंश मात्र है।

****

<u>सन्दर्भ सूची</u>

1. मनोज कुमार सिंह 'भावुक', 'भोजपुरी सिनेमा के विकास यात्रा' (भोजपुरी सिनेमा के इतिहास: भाग-1) शीर्षक आलेख से, प्र. भोजपुरी वार्ता (त्रैमासिक पत्रिका), जुलाई-सितंबर, 2000, पृष्ठ- 50
2. प्रो. आलोक पाण्डेय, 'भोजपुरी सिनेमा का समाजशास्त्र' शीर्षक आलेख से, 'परिवर्तन': साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी (त्रैमासिक पत्रिका), वर्ष-4, अंक-16, अक्टूबर-दिसंबर 2019, पृष्ठ- 113
3. 'बिटिया छठी माई के' फिल्म का वेब लिंक: https://www.youtube.com/watch?v=Yd40mdVf_LE&t=5047s(accessed on 19.05.2020)
4. वही
5. वही
6. वही
7. वही
8. वही
9. वही
10. वही
11. वही

12. वही
13. वही
14. वही
15. वही
16. वही
17. वही
18. वही
19. वही
20. वही
21. सिमोन द बोउआर, वेब लिंक: https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%AE%E0%A5%8B%E0%A4%A8_%E0%A4%A6_%E0%A4%AC%E0%A5%8B%E0%A4%89%E0%A4%86%E0%A4%B0(accessed on 19.05.2020)
22. वही
23. वेब लिंक: https://www.thebhojpuriya.com/bitiya-chhathi-mai-ke-bhojpuri-movie-trailer/(accessed on 19.05.2020)